एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

लसोड़े की आधुनिक खेती से पाए अधिक मुनाफा

(*प्रदीप कुमार कुमावत[1], भागचंद यादव[2], सुभाष बाजिया[1], पुष्पेंद्र कुमार यादव[1], मुकेश कुमार चौधरी[3] एवं शिवराज सिंह पंवार[3])

[1]कीट विज्ञान विभाग, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू (180009)

[2]उद्यानिकी विज्ञान विभाग, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (334006)

[3]पादप रोग विज्ञान विभाग, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू (180009)

* mjrppradeep131@gmail.com

लसोड़ा को हिन्दी में 'गोंदी' और 'निसोरा' भी कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम '*कॉर्डिया मायक्सा*' है। इसके फल का आकार सुपारी के बराबर होता है। कच्चे लसोड़े की सब्जी और आचार भी बनाया जाता है। लसोड़ा मध्यभारत के वनों में देखा जा सकता है लसोड़ा की खेती नम और सूखे स्थानों पर अधिक होती है। यह हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि में होता है। राजस्थान के अजमेर, जोधपुर, पाली, सिरोही, जालौर, जयपुर आदि जिलों में बहुतायत रूप से पाया जाता है। यदि लसोड़े को खेत चारों ओर, विरोध के रूप में लगाया जाता है, तो गर्मी में 'लू' से तरह सर्दियों में 'शीतलहर' से फसलों की रक्षा करता है। यह एक वर्षीय तथा बहु उपयोगी पेड़ है, बसंत ऋतु में फूल आते हैं और यह समस्त शुष्क व अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है ग्रीष्म ऋतु के अंत तक फल पक जाते हैं। लसोड़ा में मौजूद तत्व इसमें दो प्रतिशत प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, फाइबर, आयरन, फॉस्फोरस व कैल्शियम मौजूद होते हैं। लसोड़ा आयुर्वेदिक गुणों से भरपूर होता है, पके हुए लसोड़े मीठे होते हैं तथा इसके अन्दर गोंद की तरह चिकना और मीठा रस होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण इसके पेड़ लुप्त हो रहे हैं। इसके बीज से पेड़ तैयार करना लगभग असंभव है। यह एक विशाल पेड़ लगभग 30 से 40 फुट तक ऊंचा होता है जिसके पत्ते चिकने होते है, इसके बीज से एक प्रकार का गोंद निकलता है। इसके फलों में बहुत लुआब भरा रहता है, यह फल कफ निकालने वाला होने से श्लेष्मान्तक कहते हैं, लेकिन तेजी से बदलते खानपान की वजह से यह लोगों से दूर होता जा रहा है। लसोड़ा की लकड़ी से तख्ते बनाये जाते हैं और बन्दूक के कुन्दे में भी इसका प्रयोग होता है। इसके साथ ही अन्य कई उपयोगी वस्तुएं बनायी जाती हैं।

इसके पेड़ की तीन से चार जातियां होती है जिनमें से मुख्यतः दो प्रजातियों की खेती की जाती है जिन्हें 'लमेड़ा' और 'लसोड़ा' कहते हैं। जंगली या छोटे फल वाला लसोड़ा इसके पत्ते तथा फल अपेक्षाकृत छोटे होते हैं एक फल का वजन 3-4 ग्राम होता है जिससे लगभग 50 प्रतिशत गुठली तथा 50 प्रतिशत फल गुद्दा निकलता है। इसके फलों की बाजार में कोई कीमत नहीं मिलती है क्योंकि गुद्दा कम होता है लेकिन के बीजों का अंकुरण अच्छा होता है, इसके लिए बड़े फलों वाले के लिए रूटस्टॉक के लिए उपयोगी होता है।

बड़े फल वाले लसोड़ा इसमें पत्ते तथा फल जंगली से लगभग दोगुना बड़े होते हैं एक फल का वजन 6 से 10 ग्राम तथा खाने योग्य 80 से 90 प्रतिशत भाग होता है इसके बीज अंकुरण 20 से 30 प्रतिशत होता है इसलिए अगर व्यवसायिक तौर पर लगाना हो तो बड़े फल वालों को लगाना चाहिए।

पौधे तैयार करना- लसोड़े का प्रवर्धन बीज द्वारा तथा कलिकायन विधि से किया जाता है बीज द्वारा पौधे तैयार करने के लिए बड़े फलों पौधों से, जिसकी अच्छी उपज होती है पके हुए फलों से गुठली इक्कठा करके, दो- तीन दिन धूप में सुखा दे तथा इसके बाद इन्हें खाद व मिट्टी के मिश्रण से भरी हुई पॉलिथीन बेग में एक से डेढ़ इंच गहरा बुवाई कर तुरंत सिंचाई कर दे। कलिकायन विधि से पौधे तैयार करने के लिए उपयुक्त विधि से जंगली पौधों के बीज जून- जुलाई के महीने में पॉलिथीन बेग में बुवाई कर दे जब यह पौधे दो महीनों के हो जाएं, तब उन पर बड़े फलों वाले पौधों से कलिका लेकर टि- कलिकायन / ढाल विधि से कलम अगस्त या सितंबर में किया जा सकता है।

पौधे लगाना- लसोड़े के पौधे जुलाई-अगस्त में लगाने चाहिए क्योंकि मई-जून में, पौधे बुवाई योग्य हो जाते हैं तथा कलिकायन विधि से तैयार पौधों को मध्य सितंबर में लगा सकते हैं इसमें पौधे और कतार की दूरी 7 मीटर (वर्गाकार) लगा दे अगर गड्ढे में दीमक होने की आशंका हो तो मिट्टी व खाद के मिश्रण में 10 मिलीग्राम एंडोस्ल्फ़ान/ क्लोरपाइरीफोस मिला दे गड्ढे को वापसी भरते समय पौधे को लकड़ी से सहारा प्रदान करें जुलाई-अगस्त में वर्षा होने के बाद पौधे की रोपाई के समय सिंचाई करें।

कटाई-छंटाई - लसोड़ा में फल-फूल पुरानी शाखाओं पर ही लगते हैं इसके लिए प्रति वर्ष नियमित कटाई की जरूरत नहीं होती परंतु शुरू के दो-तीन साल में इसे एक मजबूत शाखा की संतुलित वृद्धि के लिए छटाई आवश्यक होती है छटाई करते समय नीचे झुकी तथा रोग ग्रस्त टहनियों को तेज धारदार उपकरण से समय-समय पर हटाते रहे ।

सिंचाई- पौधों की रोपाई के प्रथम दो वर्षों में नियमित रूप से सिंचाई करें, सर्दी में 15 दिन के अंतराल तथा गर्मियों में 7 से 10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए जब पौधे 3 से 4 साल के हो जाए पौधों में फलन शुरू हो जाता है, इस समय सिंचाई की उचित प्रबंधन अति आवश्यक होती है। पेड़ों में नवंबर से जनवरी तक सिंचाई बंद कर देने से पत्ते पीले पढ़कर गिरने लगते हैं ऐसा करने पर फूल व फल जल्दी एक साथ आ जाते हैं पत्ते गिरने के बाद दूसरे सप्ताह में खाद डालकर अच्छी तरह सिंचाई शुरू करें जिससे तापमान बढ़ने लगता है पौधों में नई बड़वार के दौरान हल्की सिंचाई 7 दिन के अंतराल पर करनी चाहिए तथा फल अप्रैल-मई में पूर्णतया फूलने लगते हैं नियमित अंतराल पर सिंचाई करें जिससे कि फलों का आकार अच्छा आ सके और बाजार भाव अच्छा मिल सके।

फलों की तोड़ाई व उपज- फल गुच्चो को हरी अवस्था में ही तोड़ लेना चाहिए ताकि काफी समय तक ताजे रहते हैं। फलों की तोड़ाई मई से शुरू होकर मध्य जून तक होती है, इसके पश्चात फल पीले पड़ने लगते हैं जो कि सब्जी के लिए अनुपयुक्त होते हैं क्योंकि इसमें लिसलिसा या मिठास अधिक हो जाता है। एक पेड़ से 25 से 100 किलोग्राम फल प्राप्त किए जा सकते हैं तथा अलग-अलग वर्षों में इसका उत्पादन कम या अधिक होता रहता है फूल आने तथा फल बनने के समय मौसम की स्थिति पर निर्भर करता है।

तुड़ाई के उपरांत प्रबंधन- फलों की तुड़ाई सुबह के समय करने के तुरंत बाद ठंडे स्थान पर रखें, जिससे कि यह अधिक समय तक ताजे बने रहते हैं यदि शाम के समय तुड़ाई करते हैं तो गहरे ठंडे स्थान पर रखा जाना

चाहिए, जहां पर हवा नहीं लगे। जिससे कि फल की गुणवत्ता अच्छी रहे और बाजार में अच्छे भाव मिले, जिससे किसानों को अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

फलों का गिरना- फरवरी के दूसरे या तीसरे सप्ताह में जब फूल शुरू हो जाते हैं तो कई बार तापमान अचानक बढ़ घट जाता है जिससे कि फूल अत्यधिक मात्रा में गिरने लगते हैं इसको कम करने के लिए बगीचे में हल्की नमी बनाए रखें तथा 2-3 मिली. प्रति 15 लिटर पानी में प्लानोफिक्स दवा मिलाकर छिड़काव करने से फल व फूल का गिरना कम हो जाता हैं।

रोग व कीट- लसोड़ा के फलों को मुख्यतः कोई कीट या रोग से नुकसान ना के बराबर ही देखा गया हैं। पौधों की शाखाओं से गोंद जैसा तरल पदार्थ निकलता है यह गोंद प्रातः शाखाओं से सूख कर पोषक तत्व व पानी के बहाव को रोक देता है जिससे कि ऊपर की शाखाएं सूखने लगती है और इससे पत्तियों का रोग होता है जिसको कोई भी फफूंदी नाशक का छिड़काव करके नियंत्रण कर सकते हैं।

लाभ –

- लसोड़े की छाल के काढ़े से कुल्ला /गरारे करने से गले की सभी तरह के रोग दूर हो जाते हैं, बलगम, दांत दर्द व खून के दोषों को भी दूर करता है। महिलाओं को माहवारी की समस्याओं में आराम मिलता है।
- जोड़ों में दर्द या फिर सूजन जैसी समस्या है तो पेड़ की छाल का काढ़ा बनाकर कपूर मिश्रण बना ले, मिश्रण को सूजन या फिर दर्द वाले स्थान पर मालिश करें।

- दादखाज और खुजली वाले स्थान पर लसोड़े के बीज को पीसकर लगाने से आराम मिलता है।
- फलों के चूर्ण को मैदा, बेसन और घी के साथ मिलाकर लड्डू बनाते हैं। लड्डू के सेवन शरीर को ताकत और स्फूर्ति मिलती है।
- हैजा के रोगी को लसोड़े+चने की छाल को पीसकर खिलाने से हैजा रोग में लाभ होता है।

लसोड़ा के नुकसान-

लसोड़ा के अधिक सेवन करने से आमाशय और जिगर के लिए हानिकारक हो सकता है। इसके दोषों को दूर करने के लिए दाना उन्नाव और गुलाब के फूल मिलाकर लसोड़े का उपयोग करना चाहिए।

AGRI ARTICLES
Publishing Skills...
E-Magazine for Agricultural Articles
(www.agriarticles.com)